बरेली, बुधवार
19 फरवरी, 2025
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 16+4=20

दैनिक जागरण

inext

PAGE NO:06 TOP

देश का विभाजन नहीं हुआ दिल बांट दिए

संभागीय नाट्य समारोहः उप्र संगीत नाटक अकादमी और एसआरएमएस रिद्धिमा की प्रस्तुति

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (18 Feb): उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी लखनऊ और एसआरएमएस रिद्धिमा के संयुक्त तत्वावधान में बरेली में पहली बार संभागीय नाटक समारोह रिद्धिमा आडिटोरिया में आरंभ हुआ. मंगलवार को समारोह का आरंभ प्रसिद्ध लेखक, कहानीकार सागर सरहदी लिखित नाटक मसीहा से किया गया. कन्सर्ड थिएटर लखनऊ की ओर से प्रस्तुत और अनुपम बिसारिया निर्देशित इस नाटक में वर्ष 1947 के भारत विभाजन पर शरणार्थियों की सामाजिक एवं मानसिक मनोदशा को उठाया गया. नाटक का आरंभ भारत पाकिस्तान सरहद पर भारत में एक शरणार्थी शिविर से होता है. जिसमें सारे निर्वासित शरणार्थी बिछड़ गए अपने प्रियजनों, परिवार के सदस्यों का इंतज़ार करते हैं. सरहद के दोनों तरफ दोनों मुल्क के सिपाही तैनात हैं, जो विभाजन से पहले एक ही गांव में रहते थे. मास्टर संतराम भी पाकिस्तान से आया एक शरणार्थी है, जो रोज अपनी बहन का इंतज़ार करता है, जिसे उसके ही शागिर्द उठा ले गये. जिन्हे मास्टर ने पढ़ाया था.

चेयरमैन देवमूर्ति ने किया सम्मानित.

इज्जत करने की तामील

वतन के लिए कुर्बान होने का हौसला दिया था. मां-बहन की इज्जत करने की तालीम दी थी. हिंदुस्तानी कैप्टन भी मास्टर का शागिर्द रहा है, इसलिए उनकी बहन को उनसे मिलाने में उनकी मदद करता है. उनके दुख बांटने की भी कोशिश करता है. इन सबके बीच इन्ही हालातों का मारा एक किरदार गुमनाम भी है, जो खौफनाक मंजरों को भूलने के लिए हर वक्त नशे में डूबा रहता है. एक दिन कैप्टन मास्टर की बहन लाडली को लेकर आता है, जो मानसिक, शारीरिक यातनाओं से अर्धविक्षिप्त हो गई है.

नहीं था साहस

भाई से मिलकर जब वो होश में आती है तो उसमें भाई से आंख मिलाने का साहस नहीं रहता और वो वापस पाकिस्तान की सरहद की तरफ भागती है, उसे बचाने मास्टर भी भागता है और इसी में दोनों लोग सिपाहियों की गोलियों का शिकार हो जाते हैं. तब गुमनाम चीख चीख कर लोगों को बताता है कि देश का विभाजन करने वाले राजनेता इन मुल्कों के मसीहा नहीं है, बल्कि मसीहा वो शरणार्थी हैं जिनके अपनों की लाशों पर चंद सियासतदानों ने भारत का विभाजन कर दिया और दोनों मुल्कों के बीच सरहद की लकीर खींच दी. विभाजन की त्रासदी को दिखाता हुआ नाटक यहीं पर समाप्त हो जाता है. इस अवसर पर एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक व चेयरमैन देव मूर्ति, उप्र संगीत नाटक अकादमी की ड्रामा डायरेक्टर शैलजा कांत, ट्रस्टी आशा मूर्ति, उषा गुप्ता, सुभाष मेहरा, डॉ. प्रभाकर गुप्ता, डॉ. अनुज कुमार, डॉ. शैलेन्द्र सक्सेना, डॉ. रीटा शर्मा और शहर के गण्यमान्य लोग मौजूद रहे.